सौन्दर्य शास्त्र का संगीत से संबंध

शोध निर्देशिका : शोधकर्ता :
डॉ० प्रीति गुप्ता | प्राँशु शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर शोधार्थी
परफार्मिंग आर्ट्स विभाग
स्वामी विवेकानंद सुभारती विष्वविद्यालय मेरठ

मनुष्य का दृष्य जगत से अभिन्न संबंध है। बहुत चिरकाल से मानव प्रकृति के अभिन्न अनन्त पर मुग्ध होता है। मनुष्य प्रकृति के विधिव भावों का जन्मो–मेल करते आये हैं। इन भावों को कल्पना के पंख देकर मानव के मन की कलाओं को सौन्दर्य तथा आश्चर्यमय स्थिति तक पहुँचाया है। कला मानव संस्कृति की अज है। प्रकृति से संघर्ष करते हुए मानव ने श्रेष्ठ संस्कारों के रूप में जो सौन्दर्य बोध प्राप्त होता है उसी में कला का अर्विभाव है। विकास के आदिचरण में जिस क्षण से चैतन्य मनुष्य पर पड़ने लगी, लगभग उसी क्षण से उसमें उसके विभिन्न प्रभावों की अभिव्यक्ति करने की शक्ति का उन्मेल होने लगा। उसी अन्तर आत्मा ने अपने चारों ओर की सृश्टि को जिस रूप में ग्रहण किया उसी रूप में व्यक्त भी करना चाहा। वास्तव में बाह्य सृष्टि द्वारा मनुष्य में सुख–दुख, रूप–करूण आदि की जो भावनाएँ उत्पन्न होती है, वो उसे व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता।

संगीत का बाह्य सौन्दर्य केवल बाह्य अलंकार में सम्पन्न नहीं होता वरन् असीम आत्म परिस्त्रोत की अपेक्षा रखता है। संगीत कला का सौन्दर्य बोध संगीत के आन्तरिक तथा बाह्य दोनों पक्षों से किया जाता है। बाह्य पक्ष के अंतर्गत संगीत के वर्ण, अलंकार, मींड, कण, खटका, मुर्की आदि गुणों का समावेश है, जिससे संगीत का स्वरूप आकर्षक बन जाता है। इसी प्रकार संगीत का अन्तरग भाव निर्माण प्रक्रिया में निहित है जो कि संगीत को प्रमाद बनाने में सहायक है। संगीत के संबंध में इस सौन्दर्य का ही सोपान माना जाता है। भारतीय संगीत की राग कल्पना इसी तत्व पर आधारित है।

मतंग के अनुसार राग की परिभाषा इस प्रकार हैरू–

''पूयम् ध्वनि विषेश अरतु स्वरः वर्ण विभाजितः
रंजको जनः चिन्तानाम् सः रागः कथितौ हैः''

अर्थात् राग वह है जो जन मानस को असीम आनन्द की अनुभूति कराता है। स्वर व वर्ण इस लक्ष्य के केवल माध्यम हैं तथा संगीत रूपी शरीर का केवल आवरण मात्र है। संगीत की राग कल्पना रागात्मकता का पर्याय है। राग की क्रिया के दो प्रकार होते है– कल्पित व मनोधर्म।

कल्पित वह है जो बिना हेर–फेर के मौलिक रचना के रूप में माना जाता है व मनोधर्म अपनी कल्पना शक्ति के सहारे किसी राग के तान–आलाय सहित गाते–गाते विस्तार करना मनोधर्म है।

संगीत में सौन्दर्य के लिए ख्याल गायकी बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। उसमें बन्दिशों का चयन, भावपूर्ण आलाप चारों, तानों का चमत्कार पूर्ण वैचित्य संगीत में सौन्दर्य, ठुमरी में भावपूर्ण गायकी सौन्दर्य उत्पन्न करने में सहायक है। विभिन्न प्रकार के बोलों को बनाना आदि सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं। इसमें शब्दों का होना आवश्यक नहीं है, थोड़े ही शब्दों में भावों में विविधता अधिक रहती है। व्यक्ति का सौन्दर्यात्मक भावनाओं के साथ जब तादात्मय स्थापितः होता है तभी संगीत का अभ्युदय होता है। इस तादात्मय के लिए व्यक्ति को गायन, वादन तथा नृत्य का सहारा लेना पड़ता है। जो संगीत का अभिन्न अंग है। आरोह–अवरोह के तारतम्य के द्वारा मधुर ध्वनियों का प्रवाह मिश्रित होता है। भारतीय संगीतज्ञों ने इस ध्यनि के प्रभाव को 22 खण्डों में विभक्त किया है जिन्हें श्रुति कहते हैं। उनसे से जो स्पष्ट सुनाई देते हैं, वे स्वर कहलाते हैं। श्रृतियों का प्रयोग जैसे कि तोड़ी और मुल्तानी के कोमल गन्धार से कुछ नीचे हैं। नाद स्वरों की सहायता से गतिशील होता है।

संगीत में किसी भी राग के स्वरूप में उसको विभिन्न स्वर संगीत, अल्पत्व–बहुत्व, आर्विभाव–तिरोभाव कण, मींड़, खटका, मुर्की, गमक इत्यादि उसके सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। ये सब सूक्ष्म तत्व एक–दूसरे से अलग होते हुए भी एक राग में बॅधे रहते हैं। क्योंकि राग का स्वरूप तभी बनता है जब सब तत्वों के द्वारा राग में सौन्दर्य की उत्पत्ति होती है। अतः सौन्दर्य द्वारा अनेकता में एकता विद्यमान है। सौन्दर्य कोई स्थूल वस्तु नहीं है और न ही इसका कोई आकार है। प्रत्येक कलाकार का गाने, स्वर लगाने का अपना – अपना ढंग होता है। स्वरों को लगाने के अतिरिक्त स्वरों को छेड़ने का तरीका भी प्रत्येक गायक का अपना अलग होता है। गायकी भी अलग–अलग होती है, उसमें प्रत्येक क्षण में नवीनता दिखती है। सौन्दर्य सापेक्ष व निपेक्ष है। प्रत्येक कला की एक पृष्ठभूमि होती है। राग प्रस्तुतिकरण की पृष्ठभूमि में जो तत्व हैं वो नादात्मक, काल्पनिक व लयात्मक है। संगीत में सौन्दर्य को महत्वपूर्ण अंग माना गया है कल्पना द्वारा स्वर–सौन्दर्य, लय–सौन्दर्य व ताल–सौन्दर्य के सामंजस्य से राग सौन्दर्य निखर आता है। मानव में जो नियमबद्धता व लयबद्धता है, उसी का सूक्ष्म रूप संगीत में मिलता है जो अनेक कलाओं में नहीं है।

संगीत सौन्दर्य शक्ति द्वारा प्राणी के स्थाई भावों को जगाकर रसमग्न कर देता है जो संगीतकार का लक्ष्य होता है। इसकी ठीक ठाक परिणाम सिद्ध कलाकार की प्रवीणता का परिचारक होता है।

संगीत का सौन्दर्य लय, ताल व गीत पर ही निर्भर करता है। अन्यथा काक भेद भी उसका महत्वपूर्ण अंग है। स्वरों का विशिष्ट प्रकार से समुचित प्रभाव उत्पन्न करने की दृष्टि से उन्हें उच्च नीचता के साथ प्रदर्शित करना ''काकू भेद'' कहलाता है। इसलिए एक ही स्वर समुदाय या एक ही शब्द उच्चारण द्वारा संगीतकार श्रोता के हृदय में भाव उत्पन्न करने में सफल होता है। संगीत सृजन के समय कलाकार के अन्तःकरण में ज्ञान भाव और क्रिया का संचार क्रम से होता रहता है। भूत और वर्तमान काल के क्रिया का संचार क्रम से होता रहता है। भूत और वर्तमान काल के संस्कारों का ज्ञान उदय होता है। पॉचों ज्ञानेन्द्रियों से संबंधित संस्कारों से मुक्त रूप, गंध, शब्द, स्पर्श और इसकी स्मृति साकार होती है जिससे संगीत के भाव का उत्थान होता है।

मनुष्य के हृदय में स्थाई भाव सदैव विद्यमान रहते हैं। उन भावों में उद्दीपन से ही रस उत्पन्न होता है और उस रस से कला जन्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है। उस भाव से उत्पन्न अनुभूतिपूर्ण वह तत्व जो झरने को सतत् प्रवाहित जलराशि के समान कला शिखर से फूटकर बहता रहता है। इस भाव में जहॉ उद्वेग अवस्थाऍ आती रहती हैं। वहीं मन सौन्दर्य की अनुभूति करता है तथा छन्द को लहर रची धारा से ताल के आघातों से ही वही सौन्दर्य प्रकट कराता है। इसलिए किसी संगीत रचना में जहॉ स्वर, अलंकार एवं ताल इत्यादि क्रियाओं का महत्व हैं वहीं संगीत रचना एवं गीत का भी महत्व है।

किसी राग में निबद्ध संगीत रचना उस सागर के समान है जिसमें सौन्दर्य रूपी तरंगे उठती रहती हैं। इसके अतिरिक्त लय भी एक प्रमुख तत्व है। भाव के अनुकूल शब्दों की प्रकृति जानकर उचित लय का प्रयोग संगीत में सौन्दर्यवर्धन करता है। ठीक उसी प्रकार जैसे करूणा की अभिव्यंजना के समय मनुष्य की क्रिया में ठहराव आ जाता है और चपलता नष्ट हो जाती है परन्तु उत्साह और क्रोध के अवसर पर उसकी क्रियाओं में तीव्रता आ जाती है इसलिए करूण रस के परिचायक के लिए मध्य लय तथा वीर, रौद्र, अद्भुत एवं विभत्स रस के लिए द्रुत लय का प्रयोग प्रभावशाली होता है। गीतों की रसमयता छनद और ताल का सामंजस्य गायक, वादकों की परस्पर घनक्रमता तथा स्वर और लय की रसानुवर्तता इत्यादि विषेशताऍ मिलकर संगीत में सौन्दर्यवर्धन करती है। राग में सौन्दर्य अभिव्यक्ति समान और विशमता के संतुलन में निहित है। राग सौन्दर्य अनन्त है, असीम है। कभी सौन्दर्य तरंगे स्वर से प्रस्फुटित होती है, कभी लय व ताल गंभीर हो जाती है। कभी चंचल, कभी एक सी, कभी तेज और कभी धीरे। सौन्दर्य की व्याख्या में ग्रेटे ने कहा है – ''सौन्दर्य की व्याख्या संभव नहीं है। यह एक क्षणभंगुर या अमूर्त एवं भावात्मक छाया सी है।''

सौन्दर्य की परिभाषा देना या व्याख्या ऐसे है जैसे कि मानों एक–एक बूँद पानी समुद्र में डालना। जैसे समुद्र में पानी की कोई कमी नहीं है। उसी प्रकार सौन्दर्य अपने आप में पूर्ण है।

निष्कर्ष : –

इस प्रकार सौन्दर्य महासागर की तरह है तो श्रोता इसका तट है। सागर में उठती सरल लहरें आकर तट को भिगोकर तरल कर जाती हैं, लहरें कहॉ से उठती हैं यह पता ही नहीं चलता। एक के बाद एक लहरें आती रहती है और दो लहरों की भिन्नता निरन्तर बनी रहती है। लहरें अपना स्वरूप बदलती रहती है पर सभी लहरें तट को तरल बनाये रखती हैं। यह राग–सौन्दर्य का रूप है।